रॉंची विश्वविद्यालय, रॉंची की पीएच० डी० उपाधि के लिए
हिन्दी विभाग, मानविकी संकाय में प्रस्तुत शोध–प्रारुप

हिन्दी विभाग
रॉंची विश्वविद्यालय, रॉंची

शोध विषयः
"हिन्दी साहित्य में आचार्य देवेन्द्रनाथ शर्मा का अवदान : एक अध्ययन"

शोध–निर्देशक

डॉ० प्रशांत गौरव
सहायक प्राध्यापक, हिन्दी विभाग,
गोस्सनर कॉलेज, रॉंची
चलभाष : 9430408221

शोधार्थी

लक्ष्मण प्रसाद
एम.ए., पीएच.डी. प्रवेश परीक्षा उत्तीर्ण
रॉंची विश्वविद्यालय, रॉंची
चलभाष : 7979735081

2024

i:Lrkouk

आचार्य देवेन्द्र नाथ शर्मा का नाम भारतवर्ष के लब्ध प्रतिष्ठित विद्वानों में से हैं। इनका जन्म 07 जुलाई, 1918 ई. में बिहार राज्य के सारण जिले सम्प्रति गोपालगंज के अंतर्गत बैकुंठपुर प्रखण्ड के कृतपुरा बंगरा नामक ग्राम में एक सुप्रतिष्ठित कान्यकुब्ज ब्राह्मण परिवार में हुआ था। इनके पिता पंडित शिव शरण शर्मा मोतीहारी के धर्मराज संस्कृत कॉलेज में प्राचार्य थे। आचार्य शर्मा ने मैट्रिक की परीक्षा 1934 ई. में जिला स्कूल मोतीहारी से, आई0 ए0 की परीक्षा बी0एन0 कॉलेज, पटना से एवं बी0ए0 (संस्कृत ऑनर्स) की परीक्षा पटना कॉलेज से प्रथम श्रेणी में पास की। एम0ए0 संस्कृत की परीक्षा सन 1943 ई0 और एम0 ए0 हिन्दी की परीक्षा सन 1944 ई0 में प्रथम श्रेणी में पास की। संस्कृत एवं हिन्दी की परीक्षाओं में वे प्रथमोप्रथम रहे। उनके पिता की इच्छा थी कि देवेन्द्र नाथ शर्मा आयुर्वेद का अध्ययन कर स्वनाम धन पंडित ब्रजबिहारी चौबे के समान एक सफल एवं कुशल वैद्यराज बने। फलतः देवेन्द्र नाथ जी का नामांकन राजकीय आयुर्वेद कॉलेज पटना में प्रवेश कराया गया था, लेकिन आयुर्वेद के अध्ययन में उनका मन नहीं लगा और आयुर्वेद की पढ़ाई छोड़कर उन्होंने संस्कृत में प्रवेश ले लिया और कालान्तर में संस्कृत और हिन्दी ही उनके अध्ययन–अध्यापन का क्षेत्र बना।

25 जून, 1943 को वे कुसुम शर्मा के साथ परिणय सूत्र में बंधे। कुसुम शर्मा छपरा शहर के वरीय अधिवक्ता पं0 गोरखनाथ त्रिवेदी के सुपुत्री थी। आचार्य देवेन्द्र नाथ शर्मा को दो पुत्र विनयशील गौतम(बहु– रश्मि गौतम), विजयशील गौतम (बहु– डॉ0 मीरा गौतम) और एक पुत्री डॉ0 दीप्ति त्रिपाठी हैं, जिनका विवाह प्रबोधचंद्र तिवारी से हुआ।

आचार्य देवेन्द्र नाथ शर्मा को कभी नौकरी नहीं खोजनी पड़ी अपितु स्वयं नौकरी ने उन्हें बार–बार खोजा है। नौकरी प्राप्त कर वे धन्य नहीं हुए अपितु स्वयं नौकरी इन्हें प्राप्त कर गौरवान्वित हुई। स्वयं नौकरी इनके पीछे–पीछे चली है और वे आगे–आगे। पटना कॉलेज में हिन्दी व्याख्याता के रूप में उन्होंने अपनी शैक्षणिक अध्यापन यात्रा प्रारंभ की थी और उसकी अंतिम परिणति पटना विश्वविद्यालय के कुलपति के रूप में हुई। वे बिहार विश्वविद्यालय मुजफ्फरपुर के हिन्दी विभाग के अध्यक्ष रहे तद्न्तर पटना विश्वविद्यालय के हिन्दी विभागाध्यक्ष बने। वे कामेश्वर सिंह संस्कृत विश्वविद्यालय, दरभंगा और पटना विश्वविद्यालय के कुलपति भी रहे। वे बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी पटना, बिहार राज्य अंतर्विश्वविद्यालय बोर्ड पटना और बिहार हिन्दी साहित्य सम्मेलन, पटना के भी अध्यक्ष रहे।

बहुभाषाविद् विद्वान और महान हिन्दी मर्मज्ञ के साथ–साथ आचार्य देवेन्द्र नाथ शर्मा एक महान साहित्यकार और भाषा शास्त्री ही नहीं, देश के गौरव पुरुष थे। उन्हें संस्कृत, हिन्दी, उर्दू,

फारसी, बंगला, गुजराती, मराठी, मैथिली आदि भारतीय भाषाओं के साथ–साथ अंग्रेजी, रूसी, फ्रेंच, जर्मन, ग्रीक और लैटिन भाषाओं का भी गहरा ज्ञान था। साहित्य की अनेक विधाओं में उन्होंने मूल्यवान सृजन किया है। काव्यशास्त्र और साहित्यालोचन पर लिखी गयी उनकी पुस्तकें आज भी विद्यार्थियों के लिए आदर्श ग्रंथ हैं। नाटक और ललित निबंध समेत साहित्य के विभिन्न विधाओं में उन्होंने दो दर्जन से भी अधिक पुस्तके लिखी हैं, जो आज अत्यंत मूल्यवान धरोहर के रूप में साहित्य संसार को उपलब्ध हैं। वे एक अद्‌भुत प्रतिभा के आचार्य और पुरातन भारतीय ज्ञान के नूतन संस्करण थे। उन्हें भारतीय साहित्य और पाश्चात्य साहित्य का गहरा अध्ययन था। बिहार हिन्दी साहित्य सम्मेलन, पटना के अध्यक्ष डॉ. अनिल सुलभ ने आचार्य देवेन्द्र नाथ शर्मा के संदर्भ में कहा है कि –''आचार्य शर्मा कुछ थोड़े से महापुरुषों में से एक थे, जिन्होंने अपना संपूर्ण जीवन शिक्षा–साहित्य, संस्कृति–कला और संगीत जैसे सारस्वत विधाओं के उन्नयन में लगा दिया। वे सच्चे अर्थों में संस्कृति और संस्कार के पक्षधर संस्कृति पुरुष थे। साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष के रूप में भी उनकी स्तुत्य सेवाओं के लिए साहित्य समाज उनका ऋणी है। वे सम्मेलन द्वारा संचालित बहुभाषा महाविद्यालय में कक्षाएं भी लिया करते थे, जिसमें फ्रेंच, जर्मन, रूसी आदि भाषाओं की पढ़ाई की जाती थी। उनका व्यक्तित्व सुरसरी के समान पावन एवं पुनीत था और अपने शिष्यों के कल्याण के लिए सदैव तत्पर रहते थे।

आ0 शर्मा के लेखकी व्यक्तित्व में पांडित्य और सर्जनात्मकता का विरल संयोग है। प्रो0 दीप्ति शर्मा ने उनकी रचनाओं में 'स्पष्टता' को सर्वोत्तम गुण माना है। उन्हीं के शब्दों में– '' 'स्पष्टता' उनके लेखन का सामान्य गुण है जो किसी भी विषय के सूक्ष्म एवं गहन ज्ञान, चिन्तन की विशदता एवं अभिव्यंजना के सामर्थय की परिणति है। जिस सरलता और सरसता से वे जटिल शास्त्रचर्या कर जाते हैं। उससे पाठक के मन में भ्रान्ति का अवकाश नहीं रहता, और अंत तक रचना पढ़ने की उत्सुक्ता रहती है। उनके लेखन का दूसरा गुण है 'प्रामाणिकता'। उनके समस्त काव्यशास्त्री लेखन की सामग्री मूल स्रोतों से ली गयी है, फिर चाहे वह भारतीय काव्यशास्त्र हो अथवा पाश्चात्य काव्यशास्त्र।''[1]

अनुशासनप्रिय और समय के पाबन्द देवेन्द्रनाथ शर्मा कभी एक मिनट विलम्ब से कक्षा में नहीं पहुँचे। वे प्रायः कहा करते थे। जो समय की कद्र नहीं करता समय उसकी कद्र नहीं करता।''[2] आ0 शर्मा पुस्तकों के रख–रखाव का विशेष ध्यान रखते। पुस्तकों के पृष्ठ मोड़कर रखने वालों से वो कहा करते 'यदि कोई पुस्तक का पृष्ठ मोड़ता है तो मुझे ऐसा लगता है जैसा उसने मेरी उँगली मोड़ दी हो।''[3]

आचार्य देवन्द्रनाथ शर्मा के व्यक्तित्व एवं कृतित्व में सुरसरी की यही पावनता समाविष्ट थी। उनका आकस्मिक निधन 17 जनवरी 1991 को एक सभा में व्याख्यान देते वक्त हो गया। उनके निधन से हिन्दी एवं संस्कृत के अपूरणीय क्षति हुई। किसी ने ठीक ही कहा है कि–

cM+ xkSj ls lqu jgk Fkk tekukA
rqEgh lks x;s nkLrka dgrs&dgrsAA

आचार्य देवेन्द्रनाथ शर्मा बहुमुखी प्रतिभा संपन्न साहित्यकार थे। उनका रचना संसार विस्तृत एवं व्यापक है।

vkpk;Z nsosUnzukFk 'kekZ dk jpuk&lalkj

dkO;'kkL=h; xzUFk %

अलंकार मुक्तावली (1948), भामह विरचित काव्यालंकार का हिन्दी भाष्य (1962), काव्य के तत्त्व (1981), पाश्चात्य काव्यशास्त्र (1984)

Hkk"kk oSKkfud xzUFk %

राष्ट्रभाषा हिन्दी समस्याएँ और समाधान (1965), भाषाविज्ञान की भूमिका (1966), हिन्दी भाषा और नागरी लिपि (1972)

lekykspuk %

ब्रजभाषा की विभूतियाँ (1949), साहित्य समीक्षा (1951), हिन्दी कवियों का मूल्यांकन (1952)

,dkadh laxzg %

परिजात मंजरी (1949), बिखरी स्मृतियाँ (1958), शाहजहाँ के आँसू (1964), मेरे श्रेष्ठ रंग एकांकी (1990)

yfyr fucU/k laxzg %

खट्टा–मीठा (1950), आईना बोल उठा (1964), प्रणाम की प्रदर्शनी में (1980)

vuqokn %

एवरेस्ट का आरोहण (1955), लौटरी का टिकट (1964), मनोविश्लेषण और साहित्यालोचन (1969)

lEiknu %

साहित्यिक निबन्धावली – 1946

छायावाद और प्रगतिवाद – 1950

रिचर्ड्स के आलोचना सिद्धान्त – 1968

हिन्दी साहित्य के वृहत् इतिहास – भक्तिकाल (सगुण भक्ति) – 1967

अमर भारती – 1967

उपन्यास का शिल्प – 1973

शैली – 1973

'kks/k dh izsj.kk%&

स्नातक एवं स्नातकोत्तर की कक्षाओं में अध्ययन के दौरान मैंने कतिपय एकांकी और ललित निबंध पढ़े थे। उनमें रामवृक्ष बेनीपुरी की ''संघमित्रा'', भगवती चरण वर्मा के ''दो कलाकार'', डॉ0 रामकुमार वर्मा की ''औरंगजेब की आखिरी रात'', हरि कृष्ण प्रेमी का ''मालवप्रेम'', भारतभूषण अग्रवाल का ''महाभारत की एक सांझ'', उपेन्द्र नाथ अश्क का ''साहब का जुकाम है'', भुवनेश्वर का ''स्ट्राईक'', जगदीश चंद्र माथुर की ''रीढ़ की हड्डी'', मोहन राकेश के ''अंडे की छिलके'', डॉ0 सिद्धनाथ कुमार का ''वे अभी भी कुँवारी है'', बिपिन कुमार अग्रवाल का ''तीन अपाहिज'', आदि प्रमुख हैं। इसी क्रम में मैंने आचार्य देवन्द्र नाथ शर्मा के एकांकी शाहजहाँ के आँसू (एकांकी संकलन) के बाबर की ममता, शेरशाह, अकबर, अनुताप, फूल या काँटा, शाहजहाँ के आँसू पढ़े। आचार्य देवेन्द्र नाथ शर्मा के इन एकांकियों ने मुझे अत्यधिक प्रभावित किया उसी प्रकार मैंने अनेक ललित निबंधों को पढ़ा जिनमें आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी का ''कवि और कविता, सरदार पूर्ण सिंह का ''आचरण की सभ्यता'', आचार्य शुक्ल का ''श्रद्धा और भक्ति'', रामवृक्ष बेनीपुरी का ''नई संस्कृति की ओर'', आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का नाखून क्यों बढ़ते हैं? और आचार्य विद्यानिवास मिश्र का ''मेरा राम का मुकुट भीग रहा है'' आदि प्रमुख है। इसी क्रम में मैंने आचार्य देवेन्द्र नाथ शर्मा का खट्टा–मीठा, आईना बोल उठा और प्रणाम की प्रदर्शनी में संकलित ललित निबंधों को पढ़ा। आचार्य शर्मा के इन निबंधों ने मुझे अत्यधिक प्रभावित किया। इसी प्रकार पाश्चात्य काव्य शास्त्र का ज्ञान मैंने आचार्य शर्मा की पुस्तक ''पाश्चात्य काव्य शास्त्र से अलंकार का ज्ञान ''अलंकार मुक्तावली'' एवं काव्य के तत्व से प्राप्त किया। मैंने अनुभव किया कि आचार्य देवेन्द्र शर्मा का हिन्दी साहित्य के विकास में महत्वपूर्ण योगदान है। परिणामतः मैंने अपने शोध के लिए प्रस्तुत शोध विषय का चयन किया।

'kks/k dk;Z dk mn~ns';%

आचार्य देवेन्द्र नाथ शर्मा हिन्दी की शोभा, शक्ति और संपदा थे। जब वे जीवित थे, बिहार में उनके समकालीनों के साथ कोई बराबरी नहीं थी। उनकी चमक केवल साहित्यकार के नाते नहीं थी बल्कि उन पदों के कारण भी थी, जिनके दाएँ–बाएँ प्रतिष्ठा घूमती है। अब आचार्य शर्मा नहीं हैं, बिहार में उनका उतराधिकार किसी को प्राप्त होगा– इसमें मुझे संदेह है। इस संदर्भ में मैं कहना चाहूंगा कि आचार्य शर्मा जी शान से जिये और शान से मरे। आचार्य देवेन्द्रनाथ शर्मा

के काव्यशास्त्रीय चिन्तन का बड़ा भाग अलिखित रह गया है। जो लिखा गया है उसमें भी काफी कुछ अभी तक अप्रकाशित है। ऐसा उनके प्रकाशित ग्रन्थों की भूमिकाओं को पढ़ने से स्पष्ट हो जाता है। काव्यशास्त्र से जुड़े उनके चार ग्रन्थ है– 'अलंकार मुक्तावली', भामहविरचित काव्यालंकार का भाष्य', काव्य के तत्त्व', और 'पाश्चात्य काव्यशास्त्र'। एक अप्रकाशित ग्रन्थ है कुन्तक के वक्रोक्तिजीवित की अंग्रेजी टीका। इन सभी ग्रन्थों की भूमिका को पढ़े तो स्पष्ट है कि आचार्यजी के लेखन में कई ग्रंथों की योजना थी किसी कारण से पूरे नहीं हो सके। अलंकार मुक्तावली के आत्मनिवेदन में वे लिखते हैं ''अलंकार पर प्राचीन और अर्वाचीन दृष्टियों का समन्वय करते हुए एक विशद विवेचन का मेरा विचार था, पर समयाभाव के कारण इसे अभी नहीं कर सका। अब तो भविष्य का ही भरोसा है।''[4]

इसी प्रकार 'काव्य के तत्व' शीर्षक ग्रन्थ में भी भारतीय काव्यशास्त्र का विशद और व्यापक विवेचन करने का संकल्प उन्होंने अभिव्यक्त किया है। 'पाश्चात्य काव्यशास्त्र' में उनका द्रष्टव्य है ''भारतीय काव्यशास्त्र से परिचय के कारण पाश्चात्य काव्यशास्त्र के साथ उसकी तुलनात्मक समीक्षा की इच्छा बार–बार मन में उठती रही है।''[5]

इसी तरह उनके कई निबन्ध जो समय–समय पर लिखें तो गये लेकिन प्रकाशित नहीं किए गए, क्योंकि यदि उन्हीं के शब्दों का प्रयोग किया जाय तो उन्हें 'छपवास' का रोग नहीं था। अब इस रोग के अभाव में उन्हें कोई लाभ हुआ या नहीं, यह कहना आज सम्भव नहीं किन्तु यह निश्चित है कि इससे पाठकवर्ग को बहुत नुकसान उठाना पड़ा। मेरी संकल्पना आचार्य देवन्द्रनाथ शर्मा के उन कतिपय आलेखों का मूल्यांकन कर पाठकों के समाने लाना होगा।

'kk/k dk;l dh iklfxdrk ,o egRo

आचार्य देवेन्द्र नाथ शर्मा बिहार के पांक्तेय विद्वान थे, बहुभाषा विद् थे, शिक्षा शास्त्री थे, विलक्षण वाग्मी थे। पेशे से अध्यापक आचार्य देवेन्द्र नाथ शर्मा संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान, हिन्दी के मर्मज्ञ तथा बंगला, उर्दू, फारसी, गुजराती, फ्रेंच, जर्मन, रूसी और अंग्रेजी भाषाओं के ज्ञाता थे। वे बहुत मधुर भाषी और मिलनसार थे। समय निष्ठता उनका दुर्लभ गुण था। अपने कार्य के प्रति निष्ठा, अपनी विद्वता और कुशलता से वे प्राध्यापक पद से पटना विश्वविद्यालय के हिन्दी विभागाध्यक्ष और कालान्तर में वहीं के कुलपति हुए। वे अपने मानवीय गुणों के कारण सर्वप्रिय थे और हिंदी के किसी भी सभा–सम्मेलन में, गोष्ठी में उन्हें देखा जा सकता था। अपने भाषणों में वे हमेशा हर विषय पर कुछ नई बात, नई दृष्टि प्रस्तुत करते थे और भाषण के बीच हल्की–फुल्की फुलझड़ियों से गंभीर विषयों को भी मनोरंजक बना देते थे। वक्तृता तो उनके जीवन से जूड़ी थी लेकिन उन्होंने जो पुस्तके लिखीं, वे भी हिन्दी के संस्करण और उन्नयन के लिए महत्वपूर्ण हैं। संस्कृत की सूक्ति है– ''कीर्तिर्यस्य सः जीवति'' अर्थात् कीर्तिवान ही जीवित रहता है। आचार्य

देवन्द्र नाथ शर्मा अपने कृतित्व के कारण आज भी जीवित हैं। ऐसे यशस्वी और कीर्तिवान साहित्यकार की साहित्य साधना को लोकहित में प्रकाश में लाना इस शोध–प्रबंध की प्रासंगिकता है।

i okZu l /kku %

आचार्य देवेन्द्र नाथ शर्मा बहुमुखी प्रतिभा संपन्न साहित्यकार एवं प्रशासक रहे। जहाँ तक मेरी जानकारी है कि पटना विश्वविद्यालय एवं बिहार के अन्य विश्वविद्यालयों में उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर लघु–शोध प्रबंध लिखे गये हैं। एकांकीकार के रूप में, निबंधकार के रूप में, भाषा शास्त्री के रूप में अथवा अलंकार शास्त्री के रूप में अथवा समालोचक के रूप में उन पर यत्किंचित रूप से विचार हुआ है, लेकिन संपूर्ण रूप से उनकी साहित्य साधना एवं उनके हिन्दी के अवदान पर अभी तक कुछ नहीं हुआ है। मेरी जानकारी में झारखण्ड के किसी भी विश्वविद्यालय में आ0 देवेन्द्रनाथ शर्मा पर केन्द्रित कोई भी शोध–कार्य नहीं हुआ है। आचार्य देवेन्द्र नाथ शर्मा के व्यक्तित्व–कृतित्व पर डॉ0 विद्यानिवास मिश्र के संपादकत्व में वाणी प्रकाशन, दिल्ली से उनके मरणोपरांत 1993 में एक पुस्तक अवश्य प्रकाशित हुई है, लेकिन वह पुस्तक उनके शिष्यों एवं शुभैषियों के द्वारा उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व का संस्मरण एवं संकलन है। अतः प्रस्तुत शोध–प्रबंध उनके संपूर्ण व्यक्तित्व एवं कृतित्व के आकलन का एक विनम्र प्रयास है।

'kks/k&dk;Z dh v/;;u i)fr%

प्रस्तुत शोध–प्रबंध पाँच अध्यायों में विभक्त होगा। प्रस्तावित शोध–प्रबंध का अध्ययन विश्लेषणात्मक पद्धति पर आधारित होगा। विवेचन–विश्लेषण के क्रम में यत्र–तत्र तुलनात्मक पद्वति का भी सहारा लिया जाएगा। अतः प्रस्तावित शोध–अध्ययन मुख्यतः विश्लेषणात्मक, विवेचनात्मक एवं गौणतः तुलनात्मक शोध पद्धति/प्रविधि पर अविलंबित होगा।

शोध–प्रबंध में निम्नलिखित शोध–प्रविधियों का प्रयोग किया जाएगा–

1. आचार्य देवेन्द्रनाथ शर्मा के प्रकाशित समग्र रचनाओं का गहन अध्ययन एवं विश्लेषण।
2. ग्रंथालयों में उपलब्ध ग्रंथों, शोध–पत्रों एवं पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित सामग्री का अध्ययन।
3. आचार्य शर्मा के अप्रकाशित रचनाओं को प्रकाश में लाया जाएगा।
4. इस शोध–कार्य में वर्णनात्मक एवं विवरणात्मक–पद्धति का भी प्रयोग किया जाएगा।

5. आचार्य देवेन्द्रनाथ शर्मा प्रसिद्ध भाषा वैज्ञानिक थे अतः इस शोध में भाषा के ऐतिहासिक, वर्णनात्मक एवं तुलनात्मक पद्धति का प्रयोग करते हुए समस्या एवं समाधान को समझने का प्रयास किया जाएगा।

साथ ही शोध–प्रबंध में यह भी ध्यान रखा जाएगा कि यथासंभव शोध–कार्य की प्रणाली निष्पक्ष एवं तथ्यपरक हो। अतः स्रोतों के चयन से लेकर उनके वर्गीकरण, व्याख्या, पुनर्निर्धारण एवं विश्लेषण आदि सभी स्तरों पर किसी भी वाद, विचारधारा, आग्रह एवं पर्वाग्रह से सम्बद्ध न होकर तटस्थ रहते हुए; व्याख्या के तथ्यपरक एवं यथार्थ विवेचन के प्रति सचेष्ट रहने का प्रयास किया जाएगा।

Hkfo"; esa 'kks/kdk;Z gksus dh laHkkouk,¡%

शोध ज्ञान की अनवरत साधना है। सत्य का उद्‍घाटन है। मेरी मान्यता है कि ज्ञात साधनों के माध्यम से अज्ञात को तटस्थ एवं वैज्ञानिक तरीकों से ज्ञात करना शोध है। शोध पुराने तथ्यों की नवीन व्याख्या भी है। प्रत्येक शोधकार्य एक नए शोध के लिए प्रेरणा देता है, नई खोज के लिए उकसाता है। नए दृष्टिकोण से नए–नए मूल्यांकन को प्रशस्त करता है। इसलिए शोध की शरणियाँ बनती चली जाती है। मेरा विश्वास है प्रस्तावित शोध भी भविष्योन्मुखी शोधों का पाथेय बनेगा। नये शोधात्मक ज्ञान की अर्गला खुलेगी, नई जीवन दृष्टि को जन्म देगा और इसी विश्वास भरी दृष्टि से मैंने अपने प्रस्तावित शोध का मूल्यपरक विस्तार देने का संकल्प लिया है।

iLrqr 'kks/k&izcU/k dh :ijs[kk

v/;k;hdj.k

izFke v/;k;% vkpk;Z nsosUnz ukFk 'kekZ dk O;fDrRo ,oa कृfrRo

1.1 जीवन परिचय

1.2 पारिवारिक पृष्ठभूमि

1.3 प्रारंभिक एवं उच्चशिक्षा यात्रा

1.4 व्यक्तित्व की विशेषताएँ

1.5 कृतित्व परिचय एवं दिशा संदर्भ

- क. निबंध
- ख. नाटक एवं एकांकी
- ग. भाषा विज्ञान एवं काव्यशास्त्रीय ग्रंथ
- घ. संपादन
- ङ. आलोचना
- च. अनुवाद

f}rh; v/;k; % fucU/kdkj ds :i esa vkpk;Z nsosUnz ukFk 'kekZ dk vonku

2.1 खट्टा–मीठा : भावगत एवं कलागत मूल्यांकन

2.2 खट्टा–मीठा निबंधों का सामाजिक सरोकार

2.3 आईना बोल उठा : भावगत एवं कलागत मूल्यांकन

2.4 आईना बोल उठा निबंधों का भाषिक एवं सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में मूल्यांकन

2.5 प्रणाम की प्रदर्शनी में : भावगत एवं कलागत मूल्यांकन

2.6 प्रणाम की प्रदर्शनी में मनोवैज्ञानिक विश्लेषण

2.7 मौलिक निबंधों का सामाजिक परिप्रेक्ष्य में अवदान

r`rh; v/;k; % ukVddkj ,oa ,dkadhdkj ds :i esa vkpk;Z nsosUnz ukFk 'kekZ dk vonku

3.1 शाहजहाँ के आँसू : भावगत एवं कलागत विश्लेषण

3.2 शाहजहाँ के आँसू का सामाजिक एवं राजनीतिक परिप्रेक्ष्य का विश्लेषणात्मक अध्ययन

3.3 मेरे श्रेष्ठ रंग एकांकी : भावगत एवं कलागत विश्लेषण

3.4 मेरे श्रेष्ठ एकांकी संग्रह का मानवीय संदर्भ

3.5 पारिजात–मंजरी : भावगत एवं कलागत विश्लेषण

3.6 पारिजात मंजरी में नैतिक संदर्भों का मूल्यांकन

3.7 नाटक एवं एकांकी का मनोविश्लेषाणात्मक अध्ययन

prqFkZ v/;k; % Hkk"kk oSKkfud ,oa dkO;'kkL=h ds :i esa vkpk;Z nsosUnz ukFk 'kekZ dk vonku

4.1 भाषा वैज्ञानिक परंपरा में आचार्य शर्मा का अवदान

4.2 भाषा विज्ञान की भूमिका के मौलिकता का विवेचन

4.3 काव्यशास्त्र परम्परा में देवेन्द्रनाथ शर्मा के काव्यशास्त्रीय ग्रंथों का मूल्यांकन

4.4 अलंकार मुक्तावली और काव्य के तत्वों का शास्त्रीय मूल्यंकन

i:pe v/;k; % vkykspd] l:iknd ,o vuqoknd d: :i e: vkpk;l noUn ukFk 'keki dk vonku

5.1 आलोचक के रूप में मूल्यांकन

5.2 आचर्य शर्मा के आलोचनात्मक क्षमता की दिशा एवं दशा

5.2 संपादक के रूप में मूल्यांकन

5.3 अनुवादक के रूप में मूल्यांकन

mi lgkj@fu"d"k

lnHkZ xzFkk dh lph

vk/kkj xzFkk dh lph

lgk;d xzFk

i=&if=dk,

oscl kbV

iooorh 'kks/kkfFk;ks }kjk i:dkf'kr 'kks/k&i=

¼ukV%& ;g 'kks/k dh iLrkfor :ijs[kk gSA fofnr gS fd 'kks/k ,d lrr ifØ;k gS rFkk mlds e/; ukuk i:dkj ds m}yu lHko gSA blfy, blesa fdlh Hkh i:dkj dk vko';d l:'kks/ku vis{kr gksxkA½

I nHk xFk I ph %&

1. शर्मा, आ0 देवेन्द्रनाथ, ''अलंकार मुक्तावली'' की Hkkfedk] भारती भवन, पटना, 1969
2. शर्मा, आ0 देवेन्द्रनाथ, ''पाश्चात्य काव्यशास्त्र'' की Hkkfedk] मयूर पेपरबैक्स, नोएडा, 1984
3. त्रिपाठी, दीप्ति शर्मा,''देवेन्द्रनाथ शर्मा रचना–संचयन'',भूमिका, पृ0–20, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली, 2022
4. वही, पृ0सं0–16
5. वही, पृ0सं0–16

vk/kkj&xFk I ph

1. शर्मा, आ0 देवेन्द्रनाथ, ''अलंकार मुक्तावली'' (अलंकार ग्रंथ), भारती भवन, पटना– 1948
2. शर्मा, आ0 देवेन्द्रनाथ, ''पारिजात–मंजरी'' (चार मौलिक एकांकी नाटक), ग्रंथमाला कार्यालय, पटना– 1949
3. शर्मा, आ0 देवेन्द्रनाथ, ''खट्टा–मीठा'' (ललित निबंध संग्रह), ग्रंथमाला कार्यालय, पटना – 1950
4. शर्मा, आ0 देवेन्द्रनाथ, ''छायावाद और प्रगतीवाद'' (हिन्दी साहित्य परिषद द्वारा आयोजित साहित्यिक सप्ताह के अवसर पर पठित निबंधों का संग्रह), ग्रंथमाला कार्यालय, पटना – 1950
5. शर्मा, आ0 देवेन्द्रनाथ, ''बिखरी स्मृतियाँ'' (संस्मरण ग्रंथ), ग्रंथमाला कार्यालय, पटना – 1958
6. शर्मा, आ0 देवेन्द्रनाथ, ''भामह कृत काव्यालंकार''(हिन्दी भाष्य), बिहार राष्ट्रभाषा राष्ट्र परिषद, पटना– 1962
7. शर्मा, आ0 देवेन्द्रनाथ, ''आईना बोल उठा'' (ललित निबंधों का संकलन), भारती भवन, पटना – 1964
8. शर्मा, आ0 देवेन्द्रनाथ, ''शाहजहाँ के आँसू'' (छः एकांकी संग्रह), हिन्दी साहित्य संसार, पटना – 1964
9. शर्मा, आ0 देवेन्द्रनाथ, ''साहित्य–समीक्षा'' (साहित्यिक समीक्षात्मक निबंधों का संकलन), मोतीलाल बनारसी दास प्रकाशन, पटना– 1965
10. शर्मा, आ0 देवेन्द्रनाथ, ''राष्ट्रभाषा हिन्दीः समस्याएँ और समाधान'' (राष्ट्रभाष हिन्दी पर चिंतन), राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, 1965
11. शर्मा, आ0 देवेन्द्रनाथ, ''भाषा विज्ञान की भूमिका'' (भाषा विज्ञान), राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, 1966

Igk;d xFkk dh I ph%&

1. ओझा, डॉ0 दशरथ, ''हिन्दी नाटक कोश'' नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली– 1975
2. ओझा, डॉ0 दशरथ, ''हिन्दी नाटक उद्भव और विकास'', नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली– 1995
3. कुमार, डॉ0 सिद्धनाथ, ''हिन्दी एकांकी की शिल्प विधि का विकास'', ग्रंथम कानपुर– 1966
4. दीक्षित, डॉ0 सुरेन्द्र नाथ, ''भरत और भारतीय नाट्य कला'', राजकमल प्रकाशन, दिल्ली– 1970
5. द्विवेदी, डॉ0 हजारी प्रसाद, ''नाट्य शास्त्र की भारतीय परंपरा और दशरूपक'', राजकमल प्रकाशन, दिल्ली–1971
6. मिश्र, (सं0) डॉ0 विद्यानिवास, ''आचार्य देवेन्द्र नाथ शर्मा समष्टिमय व्यक्तित्व'', वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली–1993